## परीक्षण से तात्पर्य
(Meaning of a Test)

परीक्षण शब्द का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है—एक क्रिया रूप में और दूसरा संज्ञा रूप में। क्रिया रूप में परीक्षण से तात्पर्य उस क्रिया से होता है जिसके द्वारा किसी वस्तु, प्राणी अथवा क्रिया के गुणों की खोज की जाती है, और संज्ञा रूप में परीक्षण से तात्पर्य उस उपकरण अथवा विधि से होता है जिसके द्वारा किसी वस्तु, प्राणी अथवा क्रिया के गुणों को मापा जाता है; उनका आँकलन किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षणों से तात्पर्य मुख्य रूप से उन परीक्षणों से होता है जिनके द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों और उनके मनोवैज्ञानिक गुणों का मापन किया जाता है। इन्हें क्रमशः उपलब्धि परीक्षण (Achievement Tests) और मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Tests) कहते हैं।

## उपलब्धि परीक्षणों का सम्पादन और उनके परिणामों की व्याख्या
(Administration of Achievement Tests and Interpretation of their Results)

### उपलब्धि परीक्षणों का सम्पादन

उपलब्धि परीक्षणों के सम्पादन को वर्तमान में परीक्षा (Examination) कहते हैं। परीक्षाओं का सम्पादन सामान्यतः दो रूपों में होता है—एक घरेलू परीक्षा (Home Examination) के रूप में और दूसरा सार्वजनिक परीक्षा (Public Examination) के रूप में। और दोनों ही रूपों में तीन प्रकार की परीक्षाओं का सम्पादन होता है—मौखिक (Oral), प्रायोगिक (Practical) और लिखित (Written)। मौखिक और प्रायोगिक परीक्षण अथवा परीक्षाओं के सम्पादन के विषय में हम इतना ही कहना चाहेंगे कि इनके सम्पादन में सर्वप्रथम शिक्षकों (परीक्षकों) को विद्यार्थियों (परीक्षार्थियों) के साथ सौहार्द (Rapport) स्थापित करना चाहिए, उसके बाद परीक्षा शुरू करनी चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि समस्त परीक्षा कार्य शान्ति के साथ सम्पादित हो। और इन परीक्षाओं के आँकलन के विषय में केवल इतना कहना चाहेंगे कि शिक्षक (परीक्षक) को इनका आँकलन कुछ निश्चित मानकों के आधार पर करना चाहिए और ईमानदारी से करना चाहिए। लिखित उपलब्धि परीक्षण अथवा परीक्षा के सम्पादन एवं आँकलन की चर्चा हम कुछ विस्तार से करना चाहेंगे। प्रस्तुत है।

घरेलू परीक्षाओं के लिए उपलब्धि परीक्षण शिक्षकों को स्वयं बनाने होते हैं, उन्हें ये परीक्षण पूरी सावधानी से बनाने चाहिए (देखे-अध्याय-6)। सार्वजनिक परीक्षाओं के लिए उपलब्धि परीक्षण परीक्षा लेने वाली संस्था द्वारा भेजे जाते हैं, शिक्षकों (कक्षा निरीक्षकों) को इन परीक्षणों (प्रश्न-पत्रों) पर दिए निर्देशों को

Scanned with CamScanner

सावधानी से पढ़ना चाहिए। शिक्षकों (कक्षा निरीक्षकों) को परीक्षा कक्ष में समय से 10 मिनट पूर्व पहुँचना चाहिए। उन्हें सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि सभी परीक्षार्थी अपनी-अपनी सीटों पर शान्तिपूर्वक बैठें। इसके बाद उन्हें परीक्षार्थियों को आवश्यक निर्देश स्पष्ट रूप से देने चाहिए। अब उन्हें निर्धारित समय पर उत्तर-पुस्तिकाओं को परीक्षार्थियों की टेबिलों पर पहुँचाना चाहिए और देखना चाहिए कि परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिकाओं पर माँगी गई सूचनाओं—रोल न०, दिन, समय, विषय और प्रश्न-पत्र सही रूप में लिखते हैं। परीक्षा शुरू करने का घन्टा बजते ही उन्हें प्रश्न-पत्र परीक्षार्थियों की टेबिलों पर पहुँचा देने चाहिए। इसके बाद उन्हें देखना चाहिए कि सभी परीक्षार्थी अपना-अपना कार्य शान्तिपूर्वक करें। परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग अब एक आम बात हो गई है। इसे रोकने के लिए शिक्षकों (कक्ष निरीक्षकों) को कभी अपनी सीट से, कभी परीक्षार्थियों की सीटों के पीछे जाकर, कभी उनके दाँई ओर जाकर और कभी उनके बाँई ओर जाकर खड़े होकर पूरे परीक्षार्थियों पर निगाह रखनी चाहिए। यदि कोई परीक्षार्थी नकल की कोशिश कर रहा हो या किसी दूसरे परीक्षार्थी से कुछ पूछ अथवा बता रहा हो तो शिक्षकों (कक्ष निरीक्षकों) को उसके पास जाकर इशारों में समझना चाहिए, अपने स्थान से ऊँचे स्वर में निर्देश देने से परीक्षा भवन की शान्ति भंग होती है और परीक्षार्थियों का ध्यान बँटता है। उन्हें बीच-बीच में निर्देशों की झड़ी भी नहीं लगानी चाहिए। इससे एक ओर परीक्षा कक्ष में शान्ति भंग होती है और दूसरी ओर निर्देशों का महत्त्व कम होता है। हाँ, जब समय समाप्ति से 15 मिनट पूर्व घण्टा बजे तब उसे केवल इतना भर उच्चारण करना चाहिए—'15 मिनट शेष हैं'। और वह इसलिए कि कुछ परीक्षार्थी प्रश्नोत्तर लिखने में इतने ध्यानमग्न होते हैं कि वे घण्टे की आवाज नहीं सुन पाते। समय समाप्ति का घण्टा बजते ही शिक्षकों (कक्ष निरीक्षकों) को उत्तर-पुस्तिकाएँ एकत्रित कर यथा कक्ष में जमा कर देनी चाहिए।

घरेलू परीक्षाओं में तो शिक्षकों को इन उत्तर-पुस्तिकाओं का आँकलन भी स्वयं करना होता है और सार्वजनिक परीक्षाओं में भी यह कार्य उन्हें ही करना होता है, इसलिए इस कार्य में उनका निपुण होना आवश्यक है। वर्तमान में प्रश्न-पत्रों पर ही परीक्षार्थियों एवं परीक्षकों, दोनों के लिए स्पष्ट निर्देश होते हैं; किस प्रश्न के किस भाग को कितना महत्त्व देना है, यह अंक विभाजन द्वारा स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए नीचे लिखे प्रश्न पर गौर फरमाइए—

**प्रश्न**—उपलब्धि परीक्षण से आप क्या समझते हैं? इसका निर्माण कैसे किया जाता है? आप उपलब्धि परीक्षण का निर्माण करते समय क्या सावधानियाँ बरतेंगे? 2+14+4=20

इस प्रकार परीक्षार्थियों को भी यह ज्ञात रहता है कि उन्हें प्रश्न के किस भाग को कितना महत्त्व देना है और परीक्षकों (आँकलनकर्त्ताओं) को भी यह ज्ञात रहता है कि उन्हें प्रश्न के किस भाग के उत्तर को कितना महत्त्व देना है। वर्तमान में तो कुछ परीक्षा बोर्ड उत्तरों के नमूने भी भेजते हैं। अतः आवश्यकता है कि शिक्षक (आँकलनकर्ता) उत्तर-पुस्तिकाओं में लिखे प्रश्नों का आँकलन दिए गए निर्देशों के अनुसार धैर्यपूर्वक करें। 2-3 घन्टों में 50 उत्तर-पुस्तिकाओं का आँकलन करने वाले शिक्षक (परीक्षक), यह कार्य ईमानदारी से करते हैं, यह कैसे सोचा जा सकता है! यह कार्य तो तभी सही रूप से हो सकता है जब शिक्षक (परीक्षक) ईमानदारी से कार्य करें। परीक्षकों (आँकलनकर्ताओं) का अन्तिम कार्य होता है—अंकतालिका में प्राप्तांक चढ़ाना। यह कार्य भी परीक्षकों (आँकलनकर्ताओं) को पूरी सावधानी से करना

Scanned with CamScanner